महिला एवं बाल विकास

(Women & Child Development)

महाराणा प्रताप अध्ययन एवं जन कल्याण संस्थान जयपुर आरम्भ से ही महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इस हेतु महिलाओं को स्वरोजगार प्रशिक्षण प्रदान कराये गये हैं वहीं स्वयं सहायता समूह बनाकर उन्हें वित्तीय सहायता तथा गरीबी से सामूहिक रूप से लड़ने की पहल की है।

स्वयं सहायता समूह की बैठक का एक दृश्य

जयपुर जिले के जमवारामगढ़ तहसील के नायला, कांवरियों की ढ़ाणी, गिला की नांगल, सालेरा में महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया। इन्हें कौशल विकास प्रशिक्षण, तकनीकी उन्नयन प्रशिक्षण, डिजाईन डवल्पमेंट प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाया गया। सभी महिलायें अब प्रशिक्षण के पश्चात् व्यसायिक रूप से कार्य दक्ष हैं व गोटा–पत्ती व जरदोजी कार्य के साथ ही आरी–तारी का कार्य भी पूरे कौशल से कर रहे है, जिसके कारण न केवल उनकी मजदूरी में बढ़ोतरी हुई है, बल्कि अब वे पांरम्परिक डिजाइनों के अतिरिक्त बाजार मांग के अनुसार आरी–तारी व अन्य विधाओं व डिजाइनों का सुमेल कर नये व बेहतर उत्पाद निर्मित कर रहे हैं एवम् पूर्व की अपेक्षा अब मध्यस्थों की भागीदारी न के बराबर रह गई है। लाभान्वित महिलाओं में से कई ने स्वयं के लधु कारखाने स्थापित कर लिये हैं, व महिला–पुरूषों को भी प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध करा रहें हैं।

इसी प्रकार दौसा जिले के बालाहैड़ी में महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया। महिलाओं को कौशल विकास प्रशिक्षण, प्रोडक्ट डवलपमेंट प्रशिक्षण दिया गया जिससे उनकी कार्य क्षमता में वृद्धि हुई और साथ ही नये उत्पादों को सीखने का अवसर मिला। इसके अतिरिक्त राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय स्तरीय मेले प्रदर्शनियों में भेजा गया ताकि उन्हें बाजार में माल को बेचने की जानकारी मिले तथा नये डिजाइनों से रूबरू हो सकें। राज्य के बाहर अलीगढ़, हाथरस, मथुरा, मुरादाबाद, रामनगर तथा रेवाड़ी एवं राज्य के भिवाड़ी, तिजारा एवं अलवर में दस्तकारों को पीतल नक्काशी करने वाली महिलाओं से रूबरू कराया गया। इस तरह के भ्रमणो के आयोजन से महिलाओं को न सिर्फ बाहर निकलने का मौका मिला है वरन्

विभिन्न शहरों में अलग–अलग तरह के नक्काशी से सम्बन्धित कार्यों की जानकारी एवं वहां पर कार्य कर रहे महिलाओं से रूबरू होने का मौका भी मिला है। बालाहैड़ी के महिला सिर्फ एक ही विधा में निपुण थे मगर संस्थान ने उन्हें प्रशिक्षण प्रदान कर हर प्रकार की कला में निपुण किया। जिससे उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हुई और उनके उत्पादों को पहचान मिली।

राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत आशा सहयोगिनी प्रशिक्षण का आयोजन संस्थान द्वारा नियमित रूप से किया जाता रहा है। संस्थान ने आमेर तथा बस्सी ब्लाक के चार सौ गांवों की आशा सहयोगिनियों को आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया गया। आज वे प्रशिक्षण के बूते पर सतत रूप से ग्रामीण महिलाओं की सेवा कर मातृ शिशु मृत्यु दर में कमी ला रही है और महिलाओं तथा शिशुओं का नियमित टीकाकरण करवा रही है।

इसके अतिरिक्त संस्थान द्वारा 2001 से 2005 तक राजस्थान एड्स कंट्रोल सोसायटी के सहयोग से स्कूली छात्रों हेतु विभिन्न तरह के एड्स प्रदर्शनी, वाद–विवाद प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, मेहन्दी प्रतियोगिता, रंगोली प्रतियोगिता आदि का आयोजन करवाया जाता रहा है जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके।

इसी तरह बाल श्रमिक परियोजना के तहत जोखिमग्रस्त व्यवसायों में लिप्त 9 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा के साथ विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं, स्वरोजगार प्रशिक्षण प्रदान कराया गया। इन बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा में लाने के लिए विशेष पद्धति से शिक्षित किया ताकि वे शिक्षा से जुड़ें और समाज में अपनी पहचान कायम कर सकें।